ब्रह्म समाज (Brahmo Samaj)

हिन्दू धर्म में पहला सुधार आन्दोलन ब्रह्म समाज था जिस पर आधुनिक पाश्चात्य विचारधारा का बहुत प्रभाव पड़ा। राजा राम मोहन राय (1774-1833) इसके प्रवर्तक थे। वह एक बहुत बड़े विद्वान थे जो अरबी, फारसी, संस्कृत जैसी प्राच्य भाषाएँ और अंग्रेजी, फ्रांसीसी, लातीनी, यूनानी और इब्री भाषाएँ जानते थे। इन सब के ज्ञान के फल-स्वरूप उनका मन रूढ़ियों से हट गया था जो प्रायः एक बंगाली को बाँधे रखती थीं।

राजा राम मोहन राय

बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे परन्तु उन्हें धर्म सुधार से विशेष प्रेम था जिस समय पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित हो तरुण बंगाली इसाई धर्म की ओर आकर्षित हो रहे थे उस समय राजा राम मोहन राय हिन्दू धर्म के रक्षक के रूप में सामने आए। 15 वर्ष की अवस्था में ही उन्होंने मूर्तिपूजा की आलोचना की और अपने पक्ष को वेदोक्तियों से सिद्ध करने का प्रयत्न किया। उन्होंने हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों की पुनर्व्याख्या की और अपने पक्ष को वेदोक्तियों से सिद्ध करने का प्रयत्न किया। ~~उन्होंने हिन्दू धर्म के~~ राजा राम मोहन राय एक नवीन युग के अग्रदूत थे और उनकी जलाई हुई ज्वाला आज तक जल रही है।

1828 ई० में राम मोहन राय ने ब्रह्म समाज की नींव डाली। 1830 ई० में लिखे हुए अपने पत्र में इस समाज का उद्देश्य शाश्वत, सर्वाधार, अपरिमेय ईश्वर की पूजा है जो सारे विश्व का कर्ता और

और रक्षक हैं। उनके उपदेशों का तात्पर्य सभी धर्मों में आपसी एकता के बन्धन को सुदृढ़ करना था। राजा साहेब स्वयं हिन्दू हो रहे और यज्ञोपवीत पहनते रहे परन्तु 1833 में उनकी इंगलैंड में अकाल मृत्यु के कारण समाज का मार्गदर्शन नहीं कर सका और धीरे-धीरे उसमें शिथिलता आ गई।

ब्रह्म समाज में नया जीवन फूंकने और इसे एक ईश्वरवादी आन्दोलन के रूप में आगे बढ़ाने का श्रेय महर्षि देवेन्द्र नाथ टैगोर को था। वह इस आन्दोलन में 1842 में सम्मिलित हुए और उन्होंने ब्रह्म धर्म अवलम्बियों को मूर्ति पूजा, तीर्थ यात्रा, कर्मकाण्ड और प्रायश्चित इत्यादि से रोका। उनके विचार से लकड़ी और पाषाण की मूर्तियों को ईश्वर कैसे माना जाए। ईश्वर को जिस रूप में चाहो पूजो, अर्थात कोई गायत्री मंत्र से भी पूजना चाहे अथवा किसी साधारण रीति से पूजना चाहे तो भी ठीक है। उन्होंने केशव चन्द्र सेन को ब्रह्म समाज का धर्म का आचार्य नियुक्त कर दिया। उनके प्रभाव के अधीन हिन्दू धर्म के सर्वोत्तिम विश्वास और नैतिक आचरणों को बनाए रखा गया।

केशवचन्द्र सेन की शक्ति, वाक्पटुता और उदारवादी विचारों ने इस आन्दोलन को लोकप्रिय बना दिया। और शीघ्र ही इसकी शाखाएं बंगाल से बाहर उत्तर प्रदेश, पंजाब और मद्रास में खोल दी गई। 1865 में बंगाल में ही 54 समाज थे

③

था। परन्तु उनके उदारवाद के कारण शीघ्र ही ब्रह्म समाज में फूट पड़ गई। उन्होंने हिन्दू सामाजिक बुराइयों को भी दूर करने का प्रयत्न किया अर्थात् हम कह सकते हैं कि वह ब्रह्म समाज को हिन्दू धर्म सुधार आन्दोलन न मान कर एक नया धर्म सुधार आन्दोलन मानने लगा। देवेन्द्र नाथ टैगोर ने ब्रह्म समाज को एक भाग प्रन्यासी के रूप में 1865 में केशव चन्द्र सेन को आचार्य की पदवी से निकाल दिया। केशव चन्द्र ने एक नवीन ब्रह्म समाज का गठन कर लिया जिसे वह आदि ब्रह्म समाज कहने लगे। इसमें और सुधारों के अतिरिक्त स्त्रियों की मुक्ति, विद्या प्रसार, सस्ते साहित्य को बाँटना, मद्य निषेध तथा दान देने पर अधिक बल था।

1878 ई० में ब्रह्म समाज में एक और फूट पड़ी। केशव चन्द्र सेन ने अपनी 13 वर्षीय पुत्री का विवाह कूच विहार के अल्पआयु महाराजा से पूर्ण वैदिक कर्मकाण्ड से कर दिया। सेन के अधिकतर अनुयायियों ने दुखी होकर एक नया ब्रह्म समाज "साधारण ब्रह्म समाज" बना दिया।

ब्रह्म समाज ने भारतीय पुनर्जागरण में एक उत्तम भूमिका निभाई। धर्म के क्षेत्र में ब्रह्म समाज का महत्व इस बात में नहीं था कि उसने किन प्राचीन परम्पराओं को बनाए रखा अपितु इस बात में था कि उसने किन परम्पराओं व विश्वासों को छोड़ दिया। मुख्य रूप से हम कह सकते हैं

(4)

कि इसने अवतारवाद को छोड़ दिया। उसने यह भी कहा कि धर्म ग्रन्थों को मानवीय अन्तरात्मा तथा तर्क के ऊपर नहीं माना जा सकता, इसने बहुदेववाद तथा मूर्तिपूजा त्याग दी। वर्ण व्यवस्था की आलोचना की। परन्तु कर्म सिद्धाँत तथा पुनर्जन्म के विषय मे अपने निश्चित मत प्रकट न करके प्रत्येक प्रत्येक ब्रह्म समाजी को मानने अथवा न मानने की अनुमति दे दी।

समाज सुधार में स्त्रियों की प्रतिष्ठा को बनाने के लिए प्रयत्न किया बहु-विवाह, सती प्रथा, बाल-विवाह तथा पर्दा-प्रथा को समाप्त करने के लिए तथा विधवा-विवाह और स्त्री शिक्षा के लिए प्रयत्न किया। इन्होने जातिवाद तथा अस्पृश्यता को भी हटाने का प्रयत्न किया यद्यपि इसमें वे अधिक सफल नहीं हुए।

महाराष्ट्र में ब्रह्म विचार अथवा प्रार्थना समाज:- 1849 ई० मे महाराष्ट्र मे एक परमहंस सभा आरम्भ की गई। 1867 में केशव चन्द्र सेन की प्रेरणा से बम्बई में एक प्रार्थना समाज स्थापित किया गया। मात्र एक ईश्वरवाद के अतिरिक्त महाराष्ट्र मे समाज सुधार कार्य न कि विश्वास पर ही बल दिया गया। उनका विश्वास था कि ईश्वर का सच्चा प्यार उसके मनुष्यों की सेवा मे ही है। वे हिन्दु रूढ़िवादियों से टक्कर नहीं लेना चाहते थे अपितु शिक्षा तथा समझाने-बुझाने पर बल देते थे। मद्रास तथा पंजाब में भी कई केन्द्र खोले थे

— R —